इस्लाम का पैग़ाम पिछड़ी क़ौमों के नाम

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

"तुम सबका ख़ुदा एक है।"

ये थी वह आवाज़ जिससे दुनिया की ख़ामोश फ़िज़ा एक साथ गूँज उठी उस वक़्त जब हर तरफ़ तफ़रीक़ का दौर-दौरा था।

इन्सानियत की एकता के परख़चे उड़ गये थे और आपसी बराबरी का सिस्टम इस तरह बिखरा था कि एकता का नाम और निशान भी बाक़ी न था।

भेदभाव की वजहें

दुनिया ने ख़ुदावन्दी मख़लूक़ के बीच माद्दी अस्बाब के मातहत मुख़्तलिफ़ हैसियतों से ऊँच-नीच क़ायम कर रखी थी।

1- **माल और दौलत** यानी हर दौलतवाला आदमी फ़क़ीर, मुहताज और परेशान इन्सान को ज़िल्लत की नज़र से देखता था।

2- **हसब व नसब** यानी हर ऊँची ज़ात का आदमी नीच ज़ात को हक़ीर समझता था।

3- **रंग** यानी गोरे रंग वाले काले रंग को नीचा समझते थे।

इस्लाम ने दुनिया में आकर उन सभी फ़र्क़ों को मिटा दिया।

माल और दौलत

"मालदार तो बस एक ख़ुदा की ज़ात है और सब फ़क़ीर हैं" (क़ुरआन) इसलिए दौलतवाले और फ़क़ीर का फ़र्क बातिल है।

ख़ानदान और नसब

"मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों का फ़र्क़ तो सिर्फ़ पहचान के लिए है, मगर तुम में सबसे ज़्याद इज़्ज़त वाला वह है जो अपने फ़राएज़ का सबसे ज़्यादा एहसास रखे।

(क़ुरआन)

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने फ़रमायाः कोई फ़ख़्र नहीं क़रशी को ग़ैरक़रशी पर और अरबी को ग़ैर अरबी पर।

रंग

रसूले इस्लाम[स०] ने ये भी एलान कर दिया कि "मैं काले और गोरे सबकी तरफ़ भेजा गया हूँ" ये रंग का फ़र्क़ कैसा, काले और गोरे सब मेरी उम्मत में दाख़िल हैं इसलिए सब बराबर हैं।

इस्लाम के उसूल और बराबरी की तालीम

सिर्फ़ इस्लाम ही दुनिया का एक वह मज़हब है जिसके उसूल और अक़ीदे ऐसे बनाये गये हैं कि जिन पर बराबरी की इमारत बनायी जा सके।

1- **तौहीद**

ख़ुदा एक है, ये पहली बुनियाद है जिस पर बराबरी का महल ऊँचा होता है। मालदार फ़क़ीर, ख़ानदानी ग़ैर ख़ानदानी, गोरे काले, दौलत वाले या पेशे वाले इस हैसियत से सब बराबर हैं कि वह एक ख़ुदा के बन्दे हैं और एक पैदा करने वाले के पैदा किये हुए हैं और इसी लिए इस्लाम ने इस चीज़ को अपने दीनी उसूलों में सबसे पहला दर्जा दिया है।

2- अद्ल/न्याय

दुनिया में कई तरह के फ़र्क़ नज़र आते हैं कोई आसानी में है और कोई तकलीफ़ में। कोई दौलतवाला है और कोई फ़क़ीर है, कोई ताक़तवर है और कोई कमज़ोर।

इस्लाम ये कहता है कि ये फ़र्क़ सिर्फ़ देखेने के एतेबार से है। क्योंकि ख़ुदा इन्साफ़ करने वाला है, वह किसी के साथ जानिबदारी नहीं करता उसने अगर एक को आसानी दी और दूसरे को तकलीफ़, तो जिसे तकलीफ़ दी उसे उस तकलीफ का कभी न कभी बदला देगा। इसलिए नतीजे के हिसाब से वह उस पहले वाले इन्सान के बराबर माना जायेगा।

एक को दौलत दी और एक को फ़क़ीर रखा तो वह दौलत भी आज़माने के लिए है। और ये फ़क़ीरी भी आज़माइश के लिए है जिसका नतीजा दोनों को कामयाबी और नाकामी की सूरत में उनके कामों के हिसाब से मिलेगा इसलिए नतीजे के हिसाब से दोनों बराबर हैं। इस तरह दुनिया की सख़्त व नर्म और अच्छी बुरी हैसियतों से फ़र्क़ की बुनियाद पर हरगिज़ एक शख़्स को हक़ नहीं है कि वह दूसरे को गिरी हुई निगाह से देखे और उसे ज़लील समझे।

1- नुबुव्वत

यानी ख़ुदा का पैग़ाम इन्सानों के नाम इन्सानों में ही से एक ऐसी हस्ती के हाथ पर उतरता है जो अमली हैसियत से बिल्कुल मुकम्मल यानी मासूम होती है जो इसको सच्चा माने वह मुस्लिम और जो न माने वह काफ़िर।

जितने लोगों ने उसके ऊपर ईमान इख़्तियार किया है सब उसकी उम्मत हैं और जितने इस्लाम के हुक़ूक़ हैं वह सब के लिए बराबर हैं।

इस बराबरी को इस तरह ज़ाहिर किया कि "ईमान लाने वाले सब भाई हैं।" (कुरआन) उनमें हरगिज़ कोई फ़र्क़ नहीं है।

4- इमामत

पैग़म्बर के इन्तेक़ाल के बाद उसका जानशीन भी वही होता है जो अमली हैसियत से कामिल व अक्मल यानी मासूम होने की बुनियाद पर पैग़म्बर की ज़बान से ख़ुदा की तरफ़ से नामज़द हो।

उसमें न उम्र की क़ैद है न माल व दौलत की शर्त और न ताक़त और दबदबे की ज़रूरत। उसकी इताअत करने वाले ईमान के हिसाब से सब बराबर के साथी हैं जिनमें फ़र्क़ सिर्फ़ अमल की बुनियाद पर है और किसी बुनियाद पर नहीं।

5- मआद/क़यामत

यानी एक दिन है जिसमें हर एक को उसके किये का बदला दिया जायेगा। हक़ीक़त में ये वह चीज़ है जिसका एहसास दुनिया की मुख़तलिफ़ ताक़तों में बराबरी पैदा करता है। एक ताक़तवर अपने से कमज़ोर को बरबाद करते हुए सिर्फ़ इसी एहसास की बुनियाद पर डरता है कि इसकी सज़ा मिलने का डर है। एक दौलत वाला इसीलिए फ़क़ीरों की ख़बर लेता है कि उसको बदले की उम्मीद है।

फिर उसके लिए साफ़ तौर पर एक क़ानून बना दिया कि "हर इन्सान को उसका बदला दिया जायेगा जो उसने कोशिश की है" और ये कि कोई शख़्स भी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठा सकता।

"और ये कि ज़र्रा बराबर भी इस दुनिया का अमल बेकार नहीं जाता।"

"जो एक ज़र्रा भर अच्छाई करेगा उसे देख लेगा और जो ज़र्रा भर बुराई करेगा उसे देख लेगा।"(क़ुरआन)

मज़हबी हुक्मों में बराबरी

इबादत करने की जगह

मुसलमानों की सबसे बड़ी इबादत करने की जगह ख़ान-ए-काबा है जिसका हज सभी मुसलमानों पर वाजिब और ज़रूरी है। और इसके बाद दूसरी मस्जिदों का दर्जा है जिसमें सभी मुसलमान नमाज़ अदा करते हैं।

इन सभी इबादत करने की जगहों पर मज़हबी हैसियत से किसी तरह का फ़र्क़ नहीं बनाया गया है एक बड़ा बादशाह और एक फ़क़ीर व ग़रीब दोनों एक ही

वक़्त में एक ही जैसे (बराबर) हैं।

हज के अहकाम में ये बात बहुत साफ़ है। बड़े-बड़े रेशमी क़ीमती कपड़े पहनने वाले वहाँ मजबूर हैं कि एक तहबन्द और एक चादर ओढ़ें उसी तरह हज के अहकाम पूरे करें जिस तरह एक ग़रीब और फ़क़ीर पूरे करता है।

मस्जिदों में भी इसी तरह बराबरी बनायी गयी है उनके दरवाज़े हर मुसलमान के लिए एक ही तरह से खुले हुए हैं।

नमाज़े जमाअत

जमाअत की नमाज़ के वक़्त ये बराबरी पूरी तरह सामने आती है। वहाँ बादशाह और ग़ुलाम एक साथ होते हैं। और याद रहे कि अगर एक फ़क़ीर पहली सफ़ में है और अमीर किसी दूसरी सफ़ में तो उस अमीर का सर उस फ़क़ीर के पैरों के पास होगा।

शादी-बियाह

शादी के लिए बराबरी करने ज़रूरत है तो उसके लिए साफ़ एलान कर दिया। "हर मोमिन दूसरे मोमिन का हमसर है"। (क़ुरआन)

इस तरह शादी के लिए मुसलमानों के बीच कोई फ़र्क़ नहीं रखा गया है और हर मुसलमान मर्द की शादी हर मुसलमान औरत के साथ जायज़ क़रार दी गई है।

ख़ाना-पीना

मुसलमानों के बीच छुआछूत को सिर्फ़ ख़त्म ही नहीं किया गया बल्कि इसके ख़िलाफ़ पूरी कोशिश की गई। और कई तरह से शौक़ दिलाया गया कि मुसलमान एक दूसरे के साथ एक जैसा सुलूक करें। यहाँ तक कहा गया कि "एक मुसलमान का झूठा दूसरे मुसलमान के लिए फ़ायदेमन्द है" इसमें हरगिज़ किसी तरह का फ़र्क़ नहीं किया गया है।

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की अमली तालीम

हज़रत मुहम्मद[स०] ने अपनी अमली तालीम से भी साबित कर दिया कि इस्लाम नीची क़ौमों को ऊँचा उठाने वाला है इसके लिए नीचे दी हुई मिसालें यादगार हैं।

1- **सलमान फ़ारसी[रज़ि०]**

अरब के मुल्क में ग़ैर अरब अछूत का दर्जा रखते थे। रसूल ने एक ग़ैर अरब इन्सान फ़ारस के रहने वाले सलमान[रह०] को इतनी इज़्ज़त दी कि दूसरे बड़े-बड़े क़ौम और क़बीले के ख़ानदानी सरदारी और इज़्ज़त रखने वाले लोगों को भी रश्क (जलन) पैदा होता था।

रसूल[स०] ने मुसलमान की इज़्ज़त बढ़ाने के लिए यहाँ तक कह दिया था कि "सलमान हम अहलेबैत में से हैं।"

और पैग़म्बर के छटे जानशीन हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के सामने जब सलमान[रह०] का नाम आया तो आपने फ़रमायाः "सलमाने फ़ारसी" न कहो बल्कि "सलमाने मुहम्मदी" कहो।

2- **बिलाल हबशी**

हबश के मुल्क के रहने वाले, काले रंग के इन्सान बिलाल को पैग़म्बरे इस्लाम ने अपनी मस्जिद के मोअज़्ज़िन (अज़ान देने वाले) का ओहदा दिया। तो जाहिलियत के दौर का ज़हन रखने वाले बहुत से मुसलमानों को बहुत बुरा लगा और कहा कि ये तो हुरूफ़ (अक्षर) भी साफ़ अदा नहीं करते। शीन को सीन कहते हैं। तो पैग़म्बरे इस्लाम ने इन लोगों को ये कहकर ख़ामोश कर दिया कि "बिलाल का 'सीन' ख़ुदा के नज़दीक 'शीन' का दर्जा रखता है"।

शादी-बियाह की अमली मिसाल

मिक़दाद बिन अस्वद दूसरी क़ौम के आदमी थे। ग़रीब और परेशान थे। मुसलमानों में कोई अपनी लड़की देने पर तैयार नहीं होता था। रिसालत मआब[स०] ने ख़ुद अपनी चचाज़ाद बहन ज़बीआ बिन्ते हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब का अक़्द इनके साथ पढ़ा दिया और इसकी अमली मिसाल हमेशा के लिए क़ायम कर दी।

ज़ैद बिन हारसा भी ख़रीदे हुए ग़ुलाम थे जिनके साथ हज़रत[स०] ने अपनी फूफ़ीज़ाद बहन ज़ैनब बिन्ते जहश का निकाह पढ़ा।

ताजिरों की इज़्ज़त

दुनिया में सरमायेदारी और तिजारत का भी फ़र्क़

बना दिया गया और तिजारत करने वालों को नीची निगाह से देखा जाने लगा।

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने ख़ुद बिज़नेस करके नुबुव्वत का आग़ाज़ बिज़नेस से क़रार दिया और दुनिया में बिज़नेस की इज़्ज़त को क़ायम किया और उनके सबसे बड़े शार्गिद और पहले जानशीन, इस्लामी दुनिया के सबसे बड़े पेशवा अली बिन अबी तालिब[अ०] ने बाग़ों में पानी डालकर और मीसमे तम्मार की दुकान पर बैठकर छोहारे बेचे।

जूता सिलना

दुनिया की तारीख़ में ये मिसाल बिल्कुल अलग है कि रसूल[स०] का चचाज़ाद भाई उनका दामाद, उनका वलीअहद और उनका जानशीन मस्जिद के एक कोने में बैठा रसूल[स०] की जूती हाथ में लिये सिल रहा है।

दुनिया को सबक़ दे दिया इन्सान की इज़्ज़त पर इस तरह काम करने से कोई आँच नहीं आती और किसी को सिर्फ़ इसलिए ज़िल्लत की नज़र से नहीं देखा जा सकता कि वह जूते सिलने वाला है और जूते बनाता है।

यह भी याद रखने के क़ाबिल है कि अली[अ०] उस वक़्त भी जब बादशाह तस्लीम किये जा चुके थे और हेजाज़ व इराक़ और ईरान वग़ैरा पर हुकूमत कर रहे थे और इसे कोई अपनी बेइज़्ज़ती की बात नहीं समझते थे।

अली[अ०] और क़म्बर

इस्लामी बराबरी देखना हो तो ज़रा अली[अ०] का तरीक़ा अपने ग़ुलाम क़म्बर के साथ देखो। बाज़ार में क़म्बर के साथ जाते हैं। दो कुर्ते ख़रीदते हैं एक सात दिरहम का और एक पाँच दिरहम का। सात दिरहम वाला क़म्बर को देते हैं, पाँच दिरहम वाला ख़ुद पहनते हैं।

क़म्बर कहते हैं: मौला ये क़ीमती कुर्ता आप पहनिये।

फ़रमायाः नहीं क़म्बर, तुम कमउम्र हो वह कुर्ता तुम्हारे लिये अच्छा है मैं यही पहन लूँगा जो पाँच दिरहम वाला है।

हज़रत फ़ातिमा[स०] और फ़िज़्ज़ा

ये भी सुनो- कि पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की इकलौती बेटी और इस्लाम के रहनुमा अली बिन अबी तालिब[अ०] की शरीके ज़िन्दगी फ़ातिमा ज़हरा[स०] अपनी लौंडी फ़िज़्ज़ा के साथ क्या सुलूक करती थीं।

तुमको मालूम होना चाहिए कि घर का सारा काम एक दिन हज़रत फ़ातिमा[स०] किया करती थीं और एक रोज़ फ़िज़्ज़ा।

इसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में मिलना मुमकिन नहीं है।

शहीदे कर्बला और ज़हरा[स०] की कनीज़ फ़िज़्ज़ा

सुनो! सुनो! मुसलमानों की सबसे बड़ी ज़िन्दगी की यादगार रखने वाले अमली रहनुमा, पैग़म्बर के नवासे अली[अ०] व फ़ातिमा[स०] के बेटे, हुसैन[अ०] कर्बला के शहीद ने क्या किया?

वह जब रुख़सत के लिए ख़ेमे के दरवाज़े पर आये, सब बहनों बेटियों और सभी घर में रहने वालों को सलाम किया तो उन्होंने ख़ासकर नाम लेकर फ़िज़्ज़ा को भी सलाम किया था और ये कहा था कि

"ऐ मेरी माँ की कनीज़ आप पर सलाम हो।"

हुसैन[अ०] और अबुज़र ग़फ़ारी के ग़ुलाम, जौन

एक मिसाल और भी सुन लो! जौन हबशी ग़ुलाम थे, रंग में काले थे और दूसरे मुल्क के रहने वाले थे।

कर्बला में हुसैन[अ०] की नुसरत में अपनी जान दी। हुसैन[अ०] जिस तरह अज़ीज़ों, दोस्तों की लाश के पास ख़ुद गये थे उसी तरह जौन की लाश पर भी गये। और इतना किया कि जौन का सर अपने ज़ानू पर रखा, अपना चेहरा ग़ुलाम के चेहरे पर रखा और उनके लिए भलाई की दुआ की।

इस्लाम की तारीख़ और हक़ीक़ी इस्लामी रहनुमाओं की ज़िन्दगी की सीरत ऐसी मिसालों से भरी हुई है।

याद रखो कि दुनिया का कोई मज़हब अपने उसूल और अपनी सीख के एतेबार से इस तरह बराबरी की हिमायत साबित नहीं कर सकता जिस तरह इस्लाम। यक़ीनन इस्लाम ही एक ऐसा अकेला मज़हब है जो पिछड़ी क़ौमों को बराबरी का हक़ दे सकता है और उनकी तरक़्क़ी और बड़ाई की ज़मानत लेने वाला है।

(28 सफ़र 1355[हि०] मुताबिक़ 21 मई 1936[ई०])